वैभव लक्ष्मी व्रत
सुख, शांति, वैभव और लक्ष्मी प्राप्ति के लिये
अद्भुत चमत्कारी प्राचीन व्रत
प्रकाशक:
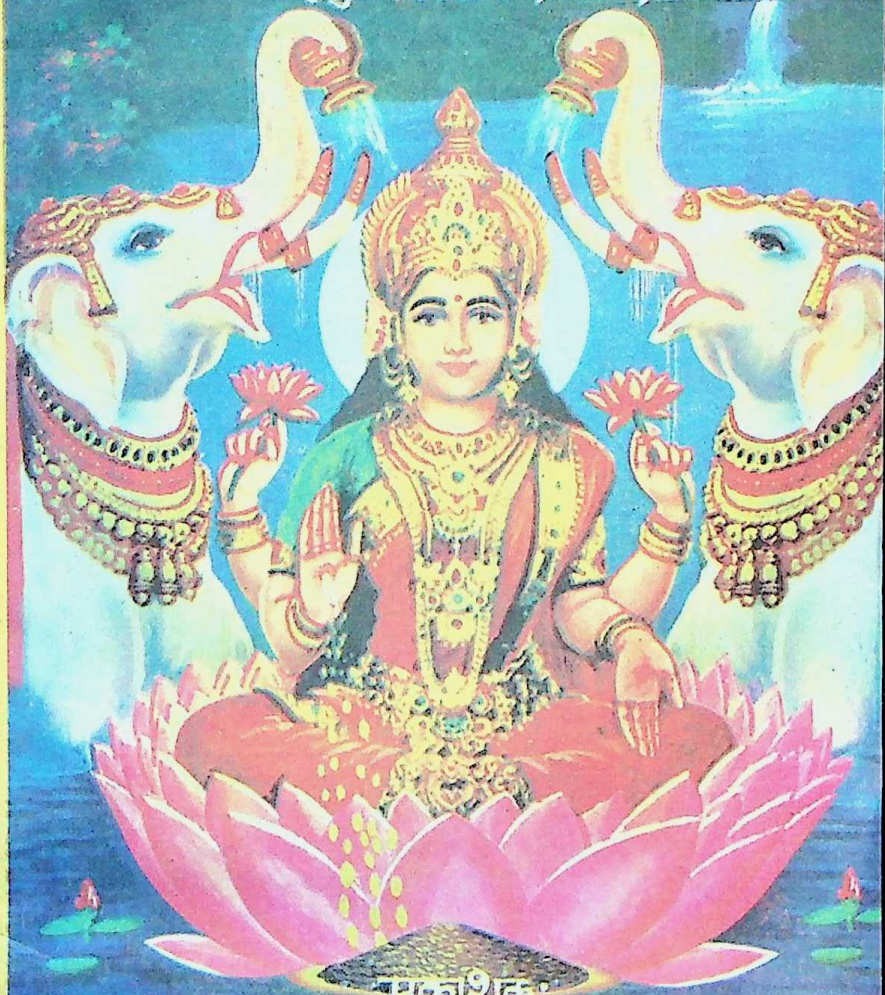
माँ लक्ष्मीदेवी को प्रसन्न करनेवाला अद्भुत
चमत्कारिक सुख, संपत्ति और शांति देनेवाला
श्री यंत्र
। ॐ ऐं श्रीमहालक्ष्म्यै नमः ।
'वैभवलक्ष्मी व्रत' शुरु करने से पहले यह
श्री यंत्र को प्रणाम करके माथा टेकना चाहिये ।
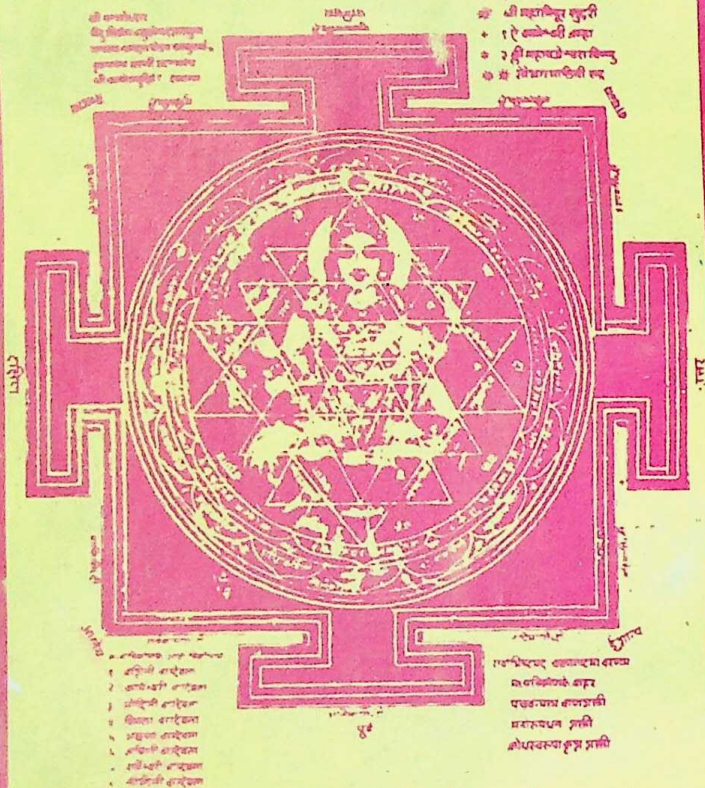
रु.१५.०० **'साहित्य संगम-सूरत' का 'वैभवशाली व्रत'**

अब जर्मन भाषा में

'साहित्य संगम' में प्रकाशित व्रतों की किताबें शुद्ध और शास्त्रीय होती हैं। उसमें व्रत कैसे करना चाहिए उसकी पूरी शास्त्रीय विधि दी जाती है। इसलिए 'साहित्य संगम-सूरत' का 'वैभवशाली व्रत' हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती, मराठी, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, बंगाली और सिंधी के अतिरिक्त यूरोप-अमेरिका के लोगों के लिए अंग्रेजी में और अब आर्य संस्कृति के चाहक जर्मन के लिए जर्मन भाषा में प्रकाशित करनी पड़ी है।

पूरे साल की सुख-शांति

हर साल 'साहित्य संगम-सूरत' का भारत सरकार में रजिस्टर्ड कॉपीराइट नं. एल.११६३९/८८ वाला 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करें ओर श्रीयंत्र की छविवाला 'वैभवशाली पंचांग (कॅलेण्डर) घर में रखें। माँ वैभवलक्ष्मी का आशीर्वाद सदा आपके घर पर रहेगा।

शुद्ध सच्चा और शास्त्रीय विधि से करने का प्राचीन, शीघ्र फलदायी व्रत, जिसका फल सच्चे भाव से करने पर अवश्य मिलता है।

वैभवलक्ष्मी व्रत

व्रत करने की शास्त्रीय विधि, व्रत पूरा होने पर उसका उद्यापन करने की शास्त्रीय विधि, व्रत की कथा, व्रत करते वक्त पालने के नियम, व्रत न फल दे तो उनकी वजह, लक्ष्मी स्तवन, श्री लक्ष्मी महिमा, श्री वैभवलक्ष्मी व्रत के सच्चे बने हुए किस्से, श्रीयंत्र, श्री लक्ष्मीमाता की आठ स्वरूप की छवियाँ, आरती, स्तुति वगैरह का एक मात्र संपूर्ण, सच्चा, प्राचीन और शीघ्र फलदायी व्रत का पुस्तक।

ताँबे पर सिद्ध श्रीयंत्र रु. १०० (डाक से रु. १२०)

ताँबे पर सिद्ध श्री कुबेरयंत्र रु. १०० (डाक से रु. १२०)

कई पुस्तक वाले लिखते हैं कि सोने के गहने की पूजा की, मानो 'वैभवलक्ष्मी व्रत' पूरा हो गया। यह बात सरासर गलत है। सिर्फ यही पुस्तक में धनलक्ष्मी यानि कि वैभवलक्ष्मी की असली छवि भी पहली बार प्रकट की गई है। अगर सच्चे भाव से यह पुस्तक में दिखाई गई शास्त्रीय विधि अनुसार उनकी उद्यापन विधि की जाय तो यह व्रत का फल अवश्य मिलता है।

साहित्य संगम, पंचाली वाडी के सामने, बावासीदी, गोपीपुरा, सूरत-३९५००१
फोन : (०२६१) २४२७८८२ / २४३२५६३

यह व्रत शीघ्र फलदायी है, किन्तु फल ना मिले तो तीन महींने के बाद फिर से यह व्रत शुरु करना चाहिये और जब तक फल न मिले तब तक यह व्रत तीन-तीन महीने पर करते रहना चाहिये । तो कभी भी इसका फल मिलता ही है।

व्रत विधि शुरु करने की पहली विधि

१. 'श्री यंत्र' को सामने रखकर 'श्रीयंत्र को प्रणाम' करना चाहिये। पुस्तक में 'श्रीयंत्र' की छवि दी हुई है।

२. 'माँ वैभव लक्ष्मी' जी के नीचे आठ चित्र दिए गए हैं उनको प्रणाम करें।

(१)श्री धनलक्ष्मी माँ (२) श्री गजलक्ष्मी माँ
(३) श्री अधिलक्ष्मी माँ (४) श्री विजयालक्ष्मी माँ
(५) श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी माँ (६) श्री वीरलक्ष्मी माँ
(७) श्री धान्यलक्ष्मी माँ (८) श्री संतान लक्ष्मी माँ

३. बाद में नीचे दिए हुए 'लक्ष्मी स्तवन' का पाठ करें । गहने की पूजा करते वक्त बोलने का मंत्र-

लक्ष्मी स्तवन

श्लोक

या रक्ताम्बुजवासिनी विलसिनी चण्डाँशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोल्हादिनी॥
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती॥

लक्ष्मी स्तवन का हिन्दी में भावार्थ- जो लाल कमल में रहती है, अपूर्व कांतिवाली है, असह्य तेजवाली है, पूर्ण रूप से लाल है, जिसनें रक्त रूप वस्त्र पहने हैं। जो भगवान विष्णु को अतिप्रिय है, जो लक्ष्मी मन को आनन्द देती है, जो समुद्र मंथन से प्रकट हुई है, जो विष्णु भगवान की पत्नी है, जो कमल से जन्मी और जो अतिशय पूज्य हैं। वैसी हे लक्ष्मी देवी! आप मेरी रक्षा करें। ......

श्री गजलक्ष्मी माँ।

हे गज लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री अधिलक्ष्मी माँ।

हे अधि लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री विजयलक्ष्मी माँ।

हे विजय लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी माँ।

हे ऐश्वर्य लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री वीरलक्ष्मी माँ।

हे वीर लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री धान्यलक्ष्मी माँ।

हे धान्य लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

श्री सन्तानलक्ष्मी माँ।

हे सन्तान लक्ष्मी माँ! आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुए वैसे सब पर प्रसन्न हो और सब की मनोकामना पूरी करें।

वैभवलक्ष्मी व्रत करने का नियम

(१) यह व्रत सौभाग्यशाली स्त्रियां करें तो उनको उत्तम फल मिलता है। पर घर में यदि सौभाग्यशाली स्त्रियां न हों तो कोई भी स्त्री एवं कुमारिका भी यह व्रत कर सकती है।

(२) स्त्री के बदले पुरुष भी यह व्रत करें तो उसे भी उत्तम फल अवश्य मिलता है।

(३) यह व्रत पूरी श्रद्धा एवं पवित्र भाव से करना चाहिये। खिन्न होकर या बिना भाव से यह व्रत नहीं करना चाहिये।

(४) यह व्रत शुक्रवार को किया जाता है। व्रत शुरू करते वक्त ११ या २१ शुक्रवार की मन्नत रखनी पड़ती है और पुस्तक में लिखी **शास्त्रीय विधि** अनुसार ही व्रत करना चाहिये। मन्नत के शुक्रवार पूरे होने पर **विधिपूर्वक** और इस पुस्तक में दिखाई गई **शास्त्रीय रीति** अनुसार उद्यापन विधि करनी चाहिये। यह विधि सरल है। **शास्त्रीय विधि अनुसार व्रत न करने पर व्रत का जरा भी फल नहीं मिलता है।**

(५) एक बार व्रत पूरा करने के पश्चात फिर मन्नत कर सकते हैं और फिर से व्रत कर सकते हैं।

(६) **माता लक्ष्मी देवी के अनेक स्वरूप हैं। उनमें उनका धनलक्ष्मी स्वरूप' ही 'वैभवलक्ष्मी' है और माता लक्ष्मी को श्रीयंत्र अति प्रिय है।** व्रत करते वक्त पुस्तक में दिये हुए मां लक्ष्मीजी के हर स्वरूप को और **'श्रीयंत्र'** को प्रणाम करना चाहिये। तभी व्रत का फल मिलता है। अगर हम इतनी भी मेहनत नहीं कर सकते हैं तो लक्ष्मीदेवी भी हमारे लिये कुछ करने को तैयार नहीं होगी और हम पर मां की कृपा नहीं होगी।

(७) व्रत के दिन सुबह से ही 'जय मां लक्ष्मी' 'जय मां लक्ष्मी' का रटन मन ही मन करना चाहिये और मां का पूरे भाव से स्मरण

करना चाहिये।

(८) शुक्रवार के दिन यदि आप प्रवास या यात्रा पर गये हो तो वह शुक्रवार छोड़कर उनके बाद के शुक्रवार को व्रत करना चाहिये। **पर व्रत अपने ही घर में करना चाहिये।** सब मिलाकर जितने शुक्रवार की मन्नत ली हो, उतने शुक्रवार पूरे करने चाहिये।

(९) घर में सोना न हो तो चांदी की चीज पूजा में रखनी चाहिये अगर वह भी न हो तो रोकड़ रुपया रखना चाहिये।

(१०) व्रत पूरा होने पर कम से कम सात स्त्रियों को या आपकी इच्छा अनुसार जैसे ११, २१, ५१, १०१ स्त्रियों को वैभवलक्ष्मी व्रत की पुस्तक कुमकुम का तिलक करके भेंट के रूप में देनी चाहिये। जितनी ज्यादा पुस्तक आप देंगे उतनी मां लक्ष्मी की ज्यादा कृपा होगी और मां लक्ष्मी जी का यह अद्‌भुत व्रत का ज्यादा प्रचार होगा।

(११) व्रत के शुक्रवार को स्त्री रजस्वला हो या सूतकी हो तो वह शुक्रवार छोड़ देना चाहिये और बाद के शुक्रवार से व्रत शुरू करना चाहिये। पर जितने शुक्रवार की मन्नत मानी हो उतने शुक्रवार पूरे करने चाहिये।

(१२) व्रत की विधि शुरू करते वक्त 'लक्ष्मी स्तवन' का एक बार पाठ करना चाहिये।

(१३) व्रत के दिन हो सके तो उपवास करना चाहिये और शाम को व्रत की विधि करके मां का प्रसाद लेकर शुक्रवार करना चाहिये। अगर न हो सके तो फलाहार या एक बार भोजन करके शुक्रवार करना चाहिये। अगर व्रतधारी का शरीर बहुत कमजोर हो तो ही दो बार भोजन ले सकते हैं। सबसे महत्व की बात यही है कि व्रतधारी मां लक्ष्मीजी पर पूरी-पूरी श्रद्धा और भावना रखें। और मेरी मनोकामना पूरी करेगी ही ऐसा दृढ़ संकल्प करे।

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

एक बड़ा शहर था। इस शहर में लाखों लोग रहते थे। पहले के जमाने के लोग साथ-साथ रहते थे और एक दूसरे के काम आते थे। पर नये जमाने के लोगों का स्वरूप ही अलग सा है। सब अपने अपने काम में रत रहते हैं। किसी को किसी की परवाह नहीं। घर के सदस्यों को भी एक-दूसरे की परवाह नहीं होती। भजन-कीर्तन, भक्ति-भाव, दया-माया, परोपकार जैसे संस्कार कम हो गये हैं। शहर में बुराईयां बढ़ गई थीं। शराब, जुआ, रेस, व्यभिचार, चोरी-डकैती वगैरह बहुत से गुनाह शहर में होते थे।

कहावत है कि हजारों निराशा में एक अमर आशा छिपी हुई है। इसी तरह इतनी सारी बुराइयो के बावजूद शहर में कुछ अच्छे लोग भी रहते थे।

ऐसे अच्छे लोगों में शीला और उसके पति की गृहस्थी मानी जाती थी। शीला धार्मिक और संतोषी थी। पति भी विवेकी और सुशील था।

शीला और उसका पति ईमानदारी से जीते थे। वे किसी की बुराई न करते थे और प्रभु भजन में अच्छी तरह समय व्यतीत कर रहे थे। उनकी गृहस्थी आदर्श गृहस्थी थी और शहर के लोग उनकी गृहस्थी की सराहना करते थे।

शीला की गृहस्थी इसी तरह खुशी-खुशी चल रही थी। पर कहा

जाता कि **'कर्म की गति अकल है'**। विधाता के लिखे लेख कोई नहीं समझ सकता है। इन्सान का नसीब पल भर में राजा को रंक बना देता है और रंक को राजा। शीला के पति के पिछले जन्म के कर्म भोगने को बाकी रह गये होंगे कि वह बुरे लोगों से दोस्ती कर बैठा। वह जल्द से जल्द **'करोड़पति'** होने के ख्वाब देखने लगा। इसलिये वह गलत रास्ते पर चढ़ गया और **'करोड़पति'** की बजाय **'रोड़पति'** बन गया। याने रास्ते पर भटकते भिखारी जैसी उसकी हालत हो गई थी।

शहर में शराब, जुआ, रेस, चरस–गाजा वगैरह बदियां फैली हुई थीं। उसमें शीला का पति भी फस गया। दोस्तों के साथ उसे भी शराब की आदत हो गई। जल्द से जल्द पैसे वाला बनने की लालच में दोस्तों के साथ रेस, जुआ भी खेलने लगा। इस तरह बचाई हुई धनराशि, पत्नी के गहने, सब कुछ रेस–जुए में गंवा दिया था।

इसी तरह एक वक्त ऐसा भी था कि वह सुशील पत्नी शीला के साथ मजे में रहता था और प्रभु भजन में सुख–शांति से वक्त व्यतीत करता था। उसके बजाय घर में दरिद्रता और भुखमरी फैल गई। सुख से खाने की बजाय दो वक्त भोजन के लाले पड़ गये और शीला को रोज पति की गालियां खाने का वक्त आया था।

शीला सुशील और संस्कारी स्त्री थी। उसे पति के बर्ताव से बहुत दुःख हुआ। किन्तु वह भगवान पर भरोसा करके बड़ा दिल रख कर दुःख सहने लगी। कहा जाता है कि **'सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख'** आता ही है। इसलिये दुःख के बाद सुख आयेगा ही, ऐसी श्रद्धा के साथ शीला प्रभु भक्ति में लीन रहने लगी।

इस तरह शीला असह्य दुःख सहते–सहते प्रभु भक्ति में वक्त बिताने लगी। अचानक एक दिन दोपहर को उनके द्वार पर किसी ने दस्तक दी।

शीला सोच में पड़ गई कि मुझ जैसे गरीब के घर इस वक्त कौन आया होगा?

फिर भी द्वार पर आये हुए अतिथि का आदर करना चाहिये, ऐसे

१४ वैभवलक्ष्मी व्रत

आर्यधर्म के संस्कार वाली शीला ने खड़े होकर द्वार खोला।

देखा तो सामने एक मांजी खड़ी थी। वे बड़ी उम्र की लगती थी। किन्तु उनके चेहरे पर अलौकिक तेज निखर रहा था। उनकी आँखों में से मानों अमृत बह रहा था। उनका भव्य चेहरा करुणा और प्यार से छलकता था। उनको देखते ही शीला के मन में अपार शांति छा गई। वैसे शीला इस मांजी को पहचानती न थी। फिर भी उनको देखकर शीला के रोम–रोम में आनंद छा गया। शीला मांजी को आदर के साथ घर में ले आयी। घर में बिठाने के लिए कुछ भी नहीं था। अतः शीला ने सकुचा कर एक फटी हुई चादर पर उनको बिठाया।

मांजी ने कहा : क्यों शीला मुझे पहचाना नहीं?

शीला ने सकुचा कर कहा : मां आपको देखते ही बहुत खुशी हो रही है। बहुत शांति हो रही है ऐसा लगता है कि मैं बहुत दिनों से जिसे ढूढ़ रही थी वे आप ही हैं। पर मैं आपको पहचान नहीं पाई।

मांजी ने हंस कर कहा : क्यों? भूल गई? हर शुक्रवार को लक्ष्मीजी के मंदिर में भजन–कीर्तन होते हैं, तब मैं भी वहाँ आती हूँ। वहाँ हर शुक्रवार को हम मिलते हैं।

पति गलत रास्ते पर चढ़ गया, तब से शीला बहुत दुःखी हो गई थी और दुःख की मारी वह लक्ष्मी जी के मन्दिर में भी नहीं जाती थी। बाहर के लोगों के साथ नजर मिलाते भी उसे शर्म लगती थी। उसने याददास्त पर जोर दिया पर यह मांजी याद नहीं आ रही थी।

तभी मांजी ने कहा, 'तू लक्ष्मीजी के मन्दिर में कितने मधुर भजन गाती थी। अभी तू दिखाई नहीं देती थी, इसलिए मुझे हुआ कि तू क्यों नहीं आती है? कहीं बीमार तो नहीं हो गई है? ऐसा सोच कर मैं तुझे मिलने चली आई हूँ।'

मांजी के अति प्रेम भरे शब्दों से शीला का हृदय पिघल गया। उसकी आँखों में आंसू आ गये। मांजी के सामने वह बिलख–बिलख कर रोने लगी। यह देख कर मांजी शीला के नजदीक सरके और उसकी सिसकती पीठ पर प्यार भरा हाथ फेर कर सांत्वना देने लगी।

वैभवलक्ष्मी व्रत १५

मांजी ने कहा, बेटी ! सुख और दुःख तो धूप और छांव जैसे होते हैं। सुख के पीछे दुःख आता है, तो दुःख के पीछे सुख भी आता है। धैर्य रखो बेटी ! और तुझे क्या परेशानी है। तेरे दुःख की बात मुझे सुना। तेरा मन भी हल्का हो जायेगा और तेरे दुःख का कोई उपाय भी मिल जायेगा।

मांजी की बात सुनकर शीला के मन को शांति मिली। उसने मांजी को कहा मां ! मेरी गृहस्थी में भरपूर सुख और खुशियां थीं। मेरे पति भी सुशील थे। भगवान की कृपा से पैसे की बात में भी हमें संतोष था। हम शांति से गृहस्थी चलाते ईश्वर–भक्ति में अपना वक्त व्यतीत करते थे। यकायक हमारा भाग्य हमसे रूठ गया। मेरे पति को [illegible] दोस्ती हो गई। [illegible] दोस्ती की वजह से वे शराब, जुआ, [illegible], चरस–गांजा, वगैरह खराब आदतों के शिकार हो गये और उन्होंने सब कुछ गंवा दिया और हम रास्ते के भिखारी जैसे बन गये।

यह सुन मांजी ने कहा–सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख आता ही रहता है। हर इन्सान को अपने कर्म भुगतने ही पड़ते हैं। इसलिये तू चिंता मत कर। अब तू कर्म भुगत चुकी है। अब तुम्हारे सुख के दिन अवश्य आयेंगे। तू तो मां लक्ष्मीजी की भक्त है। माँ लक्ष्मी तो प्रेम और करुणा की अवतार हैं। इसलिये तू धैर्य रख और मां लक्ष्मीजी का व्रत कर। इससे सब कुछ ठीक हो जायेगा।

'मां लक्ष्मीजी का व्रत' करने की बात सुनकर शीला के चेहरे पर चमक आ गई। उसने पूछा मां ! लक्ष्मीजी का व्रत कैसे किया जाता है, वह मुझे समझाइये। मैं यह व्रत अवश्य करूंगी।

मांजी ने कहा, बेटी ! मां लक्ष्मीजी का व्रत तो सीधा–सादा व्रत है। किन्तु कई लोग यह व्रत गलत तरीके से करते हैं। अतः उसका फल नहीं मिलता। कई लोग कहते हैं कि सोने के गहने की हल्दी–कुमकुम से पूजा करो। बस ! व्रत हो गया। पर ऐसा नहीं है। कोई भी व्रत शास्त्रीय विधिपूर्वक करना चाहिये। तभी उसका फल मिलता है।

यह व्रत शुक्रवार को करना चाहिये। सुबह स्नान करके स्वच्छ

कपड़े पहनो और सारा दिन मन में 'जय मां लक्ष्मी' 'जय मां लक्ष्मी' का रटन करते रहो। किसी की चुगली नहीं करनी चाहिये। शाम को पूर्व दिशा में मुंह रख सकें, इसी तरह आसन पर बैठ जाओ। सामने पाटा रख कर उसके ऊपर रुमाल रखो। रुमाल पर चावल का छोटा सा ढेर करो। उस ढेर पर पानी से भरा तांबे का कलश रख कर, कलश पर एक कटोरी रखो उस कटोरी में एक सोने का गहना रखो। सोने का न हो तो चांदी का भी चलेगा। चांदी का न हो तो नकद रुपया भी चलेगा। बाद में घी का दीपक जला कर धूपबत्ती सुलगा कर रखो।

मां लक्ष्मी जी के बहुत स्वरूप हैं। और मां लक्ष्मीजी को **'श्री यंत्र'** अति प्रिय है। अतः **वैभवलक्ष्मी** के पूजन विधि करते वक्त सर्व प्रथम **'श्री यंत्र'** और लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों का सच्चे दिल से दर्शन करो। (इस पुस्तक के अगले पृष्ठों पर **'श्री यंत्र'** और **मां लक्ष्मीजी के विविध स्वरूपों की छवि दी गई है।**) उसके बाद **'लक्ष्मी स्तवन'** का पाठ करो। बाद में कटोरी में रखे हुए गहने या रुपये पर हल्दी–कुमकुम चावल चढ़ाकर पूजा करो और लाल रंग का फूल चढ़ाओ।

शाम को कोई मीठी चीज बनाकर उसका प्रसाद रखो। न हो सके तो शक्कर या गुड़ भी चल सकता है। फिर आरती करके ग्यारह बार सच्चे हृदय से **'जय मां लक्ष्मी'** बोलो। बाद में ग्यारह या इक्कीस शुक्रवार यह व्रत करने का दृढ़ संकल्प मां के सामने करो। आपकी जो मनोकामना हो वह पूरी करने को मां लक्ष्मीजी को विनती करो। फिर मां का प्रसाद बांट दो और थोड़ा प्रसाद अपने लिये रखो। अगर आप में शक्ति हो तो सारा दिन उपवास रखो और सिर्फ प्रसाद खाकर शुक्रवार करो। न शक्ति हो तो एक बार शाम को प्रसाद ग्रहण करते समय खाना खा लो। अगर थोड़ी शक्ति भी न हो तो दो बार भोजन कर सकते हो। बाद में कटोरी में रखा गहना या रुपया ले लो। कलश का पानी तुलसी क्यारी में डाल दो और चावल पक्षियों को डाल दो। इस प्रकार शास्त्रीय विधि अनुसार व्रत करने से उसका फल अवश्य

मिलता है। इस व्रत के प्रभाव से सब प्रकार की विपत्ति दूर होकर आदमी मालामाल हो जाता है। संतान न हो उसे संतान प्राप्ति होती है सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रहता है। कुवारी लड़की को मनभावन पति मिलता है।

शीला यह सुनकर आनन्दित हो गई। फिर पूछा : मां ! आपने **वैभवलक्ष्मी व्रत** की जो शास्त्रीय विधि बताई है वैसे मैं अवश्य करूंगी। किन्तु उसकी उद्यापन विधि किस तरह करनी चाहिये? यह भी कृपा करके सुनाइये।

मांजी ने कहा : ग्यारह या इक्कीस जो मन्नत मानी हो उतने शुक्रवार यह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' पूरी श्रद्धा और भावना से करना चाहिये। व्रत के आखिरी शुक्रवार को जो शास्त्रीय विधि अनुसार उद्यापन विधि करनी चाहिये वह मैं तुझे बताती हूँ। आखिरी शुक्रवार को खीर या नैवेद्य रखो। पूजन विधि हर शुक्रवार को करते हैं वैसे ही करनी चाहिये। पूजन विधि के बाद श्रीफल फोड़ें और कम से कम सात कुवांरी या सौभाग्यशाली स्त्रियों को कुमकुम का तिलक करके साहित्य संगम की '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की एक-एक पुस्तक उपहार में देनी चाहिये और सबको खीर का प्रसाद देना चाहिये। फिर धनलक्ष्मी स्वरूप, वैभवलक्ष्मी स्वरूप, मां लक्ष्मीजी की छवि को प्रणाम करे। मां लक्ष्मी जी का यह स्वरूप वैभव देने वाला है। प्रणाम करके मन ही मन भावुकता से मां की प्रार्थना करते वक्त कहें कि '**हे मां धनलक्ष्मी, हे मां वैभवलक्ष्मी**' मैंने सच्चे हृदय से आपका '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' पूर्ण किया है। तो हे मां हमारी (जो मनोकामना की हो वह बोलो) मनोकामना पूर्ण करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो उसे संतान देना सौभाग्य शाली स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कुवांरी लड़की को मनभावन पति देना। आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत जो करे उनकी सब विपत्ति दूर करना। सबको सुखी करना हे मां आपकी महिमा अपार है।

इस तरह माँ की प्रार्थना करके माँ लक्ष्मीजी का '**धनलक्ष्मी**

स्वरूप' को भाव से वदन करो।

मांजी के पास से **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की शास्त्रीय विधि सुन कर शीला भावविभोर हो उठी। उसे लगा मानो सुख का रास्ता मिल गया है। उसने आँखें बद करके मन ही मन उसी क्षण संकल्प लिया कि **हे वैभवलक्ष्मी माँ** ! मैं भी मांजी के कहे मुताबिक श्रद्धा से शास्त्रीय विधि अनुसार **'वैंभवलक्ष्मी व्रत'** इक्कीस शुक्रवार तक करूंगी और व्रत की शास्त्रीय विधि अनुसार उद्यापन विधि करूंगी।

शीला ने संकल्प करके आंखें खोली तो सामने कोई न था वह विस्मित हो गई कि मांजी कहाँ गये ? यह मांजी दूसरा कोई न था... साक्षात् लक्ष्मीजी ही थीं। शीला लक्ष्मीजी की भक्त थी, इसलिये अपने भक्त को रास्ता दिखाने के लिए माँ लक्ष्मीदेवी मांजी का स्वरूप धारण करके शीला के पास आई थी।

दूसरे दिन शुक्रवार था। सवेरे स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहन कर शीला मन ही मन श्रद्धा से और पूरे भाव से, जय मां लक्ष्मी' 'जय मां लक्ष्मी' का मन ही मन रटन करने लगी। सारा दिन किसी की चुगली की नहीं। शाम हुई तब हाथ–पांव–मुंह धो कर शीला पूर्व दिशा में मुंह करके बैठी। घर में पहले सोने के बहुत से गहने थे। पर पतिदेव ने ग़लत रास्ते पर चढ़ कर सब गहने गिरवी रख दिये थे पर नाक की चुन्नी बच गयी थी। नाक चुन्नी निकाल कर, उसे धो कर शीला ने कटोरी में रख दी। सामने पाटे पर रूमाल रख कर मुट्ठी भर चावल का ढेर किया। उस पर तांबे क़ा कलश पानी भर कर रखा। उसके ऊपर चुन्नी वाली कटोरी रखी। फिर मांजी ने कही थी, वह शास्त्रीय विधि अनुसार वंदन, स्तवन और पूजा बगैरह किया। और घर में थोड़ी शक्कर थी, वह प्रसाद में रख कर **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** क़िया।

यह प्रसाद पहले पति को खिलाया। प्रसाद खाते ही पति के स्वभाव में फर्क पड़ गया। उस दिन उसने शीला को मारा नहीं, सताया भी नहीं। शीला को बहुत आनंद हुआ। उसके मन में **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** के लिये श्रद्धा बढ़ गई।

वैभवलक्ष्मी व्रत १९

शीला ने पूर्ण श्रद्धा–भक्ति से इक्कीस शुक्रवार तक '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' किया। इक्कीसवें शुक्रवार को मांजी के कहे मुताबिक उद्यापन विधि कर के सात स्त्रियों को '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की सात पुस्तकें उपहार में दीं। फिर माताजी के '**धनलक्ष्मी स्वरूप**' की छवि को वंदन करके भाव से मन ही मन प्रार्थना करने लगी : **हे माँ धनलक्ष्मी ! मैंने, आप का 'वैभवलक्ष्मी व्रत' करने की मन्नत मानी थी वह व्रत आज पूर्ण किया है। हे माँ ! मेरी हर विपत्ति दूर करो। हमारा सबका कल्याण करो। जिसे संतान न हो, उसे संतान देना। सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य अखंड रखना। कुंवारी लड़की को मन भावन पति देना। जो आपका यह चमत्कारी वैभवलक्ष्मी व्रत करे, उनकी सब विपत्ति दूर करना। सबको खुशी करना। हे मां ! आपकी महिमा अपार है।** ऐसा बोल कर लक्ष्मीजी के '**धनलक्ष्मी स्वरूप**' की छबि को प्रणाम किया।

इस तरह शास्त्रीय विधिपूर्वक शीला ने श्रद्धा से व्रत किया और तुरन्त ही उसे फल मिला। उसका पति गलत रास्ते पर चला गया था, वह अच्छा आदमी हो गया और कड़ी मेहनत करके व्यवसाय करने लगा। मां लक्ष्मीजी के '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' के प्रभाव से उसको ज्यादा मुनाफा होने लगा। उसने तुरन्त शीला के गिरवी रखे गहने छुड़ा लिये। घर में धन की बाढ़ सी आ गई। घर में पहले जैसी सुख–शांति छा गई।

'**वैभवलक्ष्मी व्रत**' का प्रभाव देखकर मोहल्ले की दूसरी स्त्रियां भी शास्त्रीय विधिपूर्वक '**वैंभवलक्ष्मी व्रत**' करने लगीं।

'हे मां धनलक्ष्मी आप जैसे शीला पर प्रसन्न हुई, उसी तरह आपका व्रत करने वाले सब पर प्रसन्न होना। सबको सुख–शान्ति देना। जय धनलक्ष्मी मां जय वैंभवलक्ष्मी मां।

२० वैभवलक्ष्मी व्रत

वैभवलक्ष्मी माँ के चमत्कार

१. लॉटरी लगी

नवसारी से एक बहन का पत्र था।

हम बहुत गरीब थे। दो छोटे बच्चे थे। बड़ी लड़की पोस्ट में नौकरी करती थी। उसकी तनख्वाह में से घर खर्च चल रहा था। वह पच्चीस साल की हो गई थी। इसलिये हम उसकी शादी करने की फिक्र में थे।

संयोग से एक लड़का भी मिल गया। लड़की को लड़का पसंद आ गया और लड़के को लड़की पसंद आ गई। शादी की तिथि पक्की हो गई पर एक बाधा आई लड़के की मां ने कहा, शादी भले ही सादगी से हो जाये पर आपकी लड़की 100 ग्राम सोने के गहने लेकर आयेगी तो यह शादी होगी। वरना मैं संमति नहीं दूंगी।

हमारी स्थिति चिंताजनक हो गई। मानो किनारे पर आयी नौका डूबने लगी। बचत तो थी नहीं। अब 100 ग्राम सोना कहां से निकालें?

मैं उदास होकर दरवाजे पर खड़ी थी। तभी एक मोटर– साईकिल तेजी से गुजरी और उसके ऊपर से कोई चीज सरक कर हवा में उड़ी और नीचे गिर गई। मैं जिज्ञासा से बाहर निकलकर देखने लगी कि क्या गिर गया? तो वह **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताब थी। मैंने साड़ी से पोंछ कर उसे साफ़ किया और आंखों पर लगाकर बाहर ही बैठ कर पढ़ने लगी।

पढ़ते–पढ़ते मुझे लगा कि मैं भी यह **वैभवलक्ष्मी व्रत** करूं तो मेरी आपत्ति टल जाये। लगता है माता लक्ष्मी जी ने मदद करने के लिये ही यह किताब मेरे तक पहुंचा दी होगी।

दूसरे दिन शुक्रवार था। मैंने स्नान करके ग्यारह शुक्रवार करने की मन्नत मान कर संकल्प किया। और किताब में लिखे मुताबिक विधि अनुसार पूरे भाव और श्रद्धा से व्रत करने लगी। उस किताब में लिखे अनुसार विधि

पूजन करके गुड़ का प्रसाद रखा। रात–दिन मेरा ध्यान ''**धनलक्ष्मी मां**'' की छवि में लगा रहता। पांचवे शुक्रवार को शाम को मैंने '**धनलक्ष्मी मां**' की छवि दर्शन करके पूजन विधि शुरू की, तभी मेरा पंद्रह साल का लड़का दौड़ता आया। उसने कहा, मां ! हमारी महाराष्ट्र की लॉटरी लगी है। पूरे पचास हजार का इनाम लगा है, मां! मैं आनंद से उछल पड़ी। मैंने कहा, ''तू जरा ठहर जा। मुझे पूजन कर लेने दे। प्रसाद ग्रहण करके बात करेंगे। मैंने उमंग से व्रत विधि पूर्ण की और हम सबने अति श्रद्धा से मां का प्रसाद ग्रहण किया। बाद में हम सबने लॉटरी का नंबर चेक किया तो उसकी बात सच थी। माताजी ने मेरी मुसीबत दूर कर दी थी। लॉटरी के पैसे मिलते ही उसमें से मैंने 100 ग्राम सोना लेकर लड़की के लिये गहने बनवाये और लड़की की शादी की। उसे गहने देकर ससुराल भेजी।

इस तरह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' के प्रभाव से धनलक्ष्मी मां ने मेरा दुःख दूर कर दिया। जय धनलक्ष्मी मां।

2. खोये हुए हीरे वापस मिले

मेरे पति हीरे की दलाली करते थे। अचानक एक दिन हमारे पर विपत्ति टूट पड़ी। उस दिन मेरे पति शाम को बाजार से आकर परेशान कुछ ढूंढ़ रहे थे। मैंने पूछा कि, ''क्या ढूंढ रहे हो? कुछ खो गया है?''

'हां ! हीरे का पैकेट नहीं मिल रहा। पेन्ट की बायें जेब में रखा था। नहीं मिला तो हम बरबाद हो जायेंगे।'

मेरे भी होशोहवास उड़ गये। आने–जाने के रास्ते, अपार्टमेन्ट की सीढ़ियां, रास्ता सब जगह ढूंढने लगे। पर कहीं भी पैकेट दिखाई नहीं दिया। उसी समय मेरे पति के दोस्त अपनी पत्नी के साथ हमसे मिलने आये। हमारे उदास चेहरे देखकर उन्होंने पूछा, क्या बात है? मुझे रोना आ गया। मैंने रोते–रोते हीरे का पैकेट खो जाने की बात कही।

दोस्त की पत्नी रमीला बहन ने कहा, ''भाभी'', आप '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत मानो। यह व्रत धनलक्ष्मी माता का है और व्रत की विधि

बतायी।

मैंने इक्कीस शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत मानी और 51 '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की किताब बांटने की मन्नत मानी।

सवेरे थोड़ा-थोड़ा उजाला होते ही हम ध्यान से पैकेट ढूंढते-ढूंढते बाजार में दाखिल होते ही एक पैकेट पर नजर गई। मैंने पति को दिखाया। यही है। यही है। मेरे पति ने चिल्लाते हुए तेजी से पैकेट उठा लिया। वह पैकेट वैसे का वैसा ही मिल गया।

जब शुक्रवार आया तब हम दोनों ने व्रत शुरू किया और पूरे भाव से इक्कीस शुक्रवार पूरे किये। उद्यापन विधि में हमने आपके यहां से 51 '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की पुस्तकें लेकर 51 स्त्रियों को उपहार में दी।

3. चोरी हो गये गहने वापस लिये

नीला बहन के फ्लेट का दरवाजा गलती से खुला रह गया था। उस समय ऊपर के फ्लेट में मिस्त्री का काम चल रहा था। ईंट ले जाते हुए एक मजदूर ने यह देखा नीला बहन स्नान करने गई थी। मजदूर ने कमरे के गद्दे के नीचे से गहनों को देखा, और फिर चोरी से छुपाकर भाग निकला।

उनको तो ख्याल भी नहीं था कि घर में गहने चोरी हो गये हैं। गहने पहनने के लिये गद्दे के नीचे हाथ डाला तो कुछ नहीं मिला। उन्होंने तेजी से सब उलट-पुलट कर डाला पर गहने कहीं भी नहीं मिले। वे तो जोर-जोर से रोने लगी। रोने की आवाज सुन कर सब पड़ोसन दौड़ी आई और हकीकत सुन कर नीला बहन को सांत्वना देने लगी। उनका मायका पीछे की गली में था। कोई दौड़कर वहां खबर दे आया। उनकी मां और बहन भी दौड़ती आई।

मा को देखकर नीला बहन फिर से सिसक-सिसक कर रोने लगी। मां ने कहा नीला। जो हुआ सो हुआ-तू जानती है, मुझे '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' पर बहुत श्रद्धा है। उनका ग्यारह शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत कर ले। मां तेरी बिगड़ी सुधारेगी।

नीला बहन ने तुरन्त हाथ-पांव धोकर ग्यारह शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**'

करके ग्यारह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की पुस्तक उपहार में देने की मन्नत मानी और मन ही मन जय मां लक्ष्मी का जप पूरे भाव से करने लगी।

थोड़ी देर मे उनके पति घर पर आये। नीला बहन ने रोते-रोते सब बात बताई। पति ने कहा, चल थाने में रिपोर्ट लिखवायें।

इन्स्पेक्टर रिपोर्ट लिखने लगा। नीला बहन गहने की माहिती लिखवा रही थी कि पुलिस कांस्टेबल एक मजदूर को पकड़ कर वहीं थाने में आया और बोला : 'साब यह आदमी सुनार की दुकान के आगे टहल रहा था। मुझे शक हुआ और मैंने इसे पकड़ लिया। तो इसकी जेब में से यह गहने निकल आये और नीला बहन के ही गहने कांस्टेबल ने इन्स्पेक्टर की टेबल पर रख दिये, जिसकी माहिती नीला बहन इन्स्पेक्टर को लिखवा रही थी। इन्स्पेक्टर भी विस्मित हो गया कि रिपोर्ट लिखते-लिखते ही चोर पकड़ा गया।

उस मजदूर ने गुनाह कबूल कर लिया और नीला बहन को भी पहचान लिया। लिखापढ़ी करके इन्स्पेक्टर ने गहने नीला बहन को सौंप दिये। इस तरह धनलक्ष्मी मां की कृपा से चोरी हो गये गहने नीला बहन को तुरन्त वापस मिल गये। नीला बहन ने ग्यारह शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करके ग्यारह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की पुस्तक भाव से बांटी और अपनी मन्नत पूरी की। ऐसा है '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' का प्रभाव।

4. बिजनेस अच्छा चलने लगा।

भागीदारी में झगड़ा हुआ। बिजनेस का बंटवारा हो गया। तभी से सुरेश के बुरे दिन शुरू हुए। वह दिन-रात मेहनत करता था। पर धंधा ठीक से नहीं चल रहा था। एक ही साल में वह टूट गया। उनकी पत्नी सरला हिम्मत देती रहती। पर धंधा न चले तो आदमी का मन किस तरह प्रफुल्लित होगा? सरला चोरी-छुपे से कुछ न कुछ बेचकर घर चलाती थी।

एक बार उसकी मौसी उससे मिलने आई। उसने मौसी को सब कुछ बता दिया। और रो पड़ी।

मौसी ने कहा तू '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की मन्नत लेकर ग्यारह या इक्कीस

शुक्रवार व्रत करना। अभी मेरे साथ बाजार चल और व्रत की पुस्तक खरीद ले। धनलक्ष्मी मां तेरे सब दुःख दूर करेगी। तुरन्त तैयार होकर सरला मौसी के साथ बाजार गई और साहित्य संगम की शास्त्रीय विधि वाली, श्रीयंत्र और माताजी के आठ स्वरूप वाली पुस्तक खरीद ली। दूसरे दिन शुक्रवार था। सरला विधिवत इक्कीस शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की मन्नत मान कर व्रत करने लगी।

दूसरे शुक्रवार को सुरेश शाम को आया तब उसके चेहरे पर खुशी फूट रही थी। उसने कहा, सरला आज तो चमत्कार हो गया। एक बहुत ही बड़ी कंपनी को हमारे स्पेयर पार्ट्स की क्वॉलिटी और डिजायन जंच गई। उसने हमें बहुत बड़ा आर्डर दिया है। लगता है, हमारा नसीब बदल रहा है।

बात भी सच निकली। इक्कीस शुक्रवार पूरे होते ही सुरेश का बिजनेस तेजी से बढ़ने लगा। पूरे भाव से सरला ने व्रत की उद्यापन विधि की और '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की खरीदी हुयी पुस्तक तिजोरी में रख दी। ऐसा है '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' का प्रभाव।

5. अच्छी नौकरी मिल गई।

विमला बहन का पुत्र गजेश। एम.काम. में फर्स्ट क्लास आया। घर में खुशियां छा गई। दूसरे ही दिन से गजेश ने नौकरी की खोज शुरू कर दी।

नौकरी ढूंढते-ढूंढते एक साल में गजेश थक सा गया। एक दिन विमला बहन की पड़ोसन मीना बहन अपने घर बुला गई। उसने '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' किया था उसकी उद्यापन विधि कर रही थी। मीना बहन ने सात बहनों को कुमकुम का तिलक करके '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की एक-एक पुस्तक दी और खीर का प्रसाद दिया।

विमला बहन भी '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की किताब लेकर घर आई। घर का काम निपटा कर वे किताब देखने लगी। किताब में दिये '**श्रीयंत्र**' को देखते ही उन्हें अपने मायके का वैभव याद आया। उनके पिताजी तिजोरी में '**श्रीयंत्र**' रखते थे। वे कहते थे-'**श्रीयंत्र**' लक्ष्मीजी का तांत्रिक स्वरूप है। जहां '**श्रीयंत्र**'

होगा वहां अवश्य लक्ष्मीजी का निवास होगा। विमला बहन ने भाव से '**श्रीयंत्र**' पर माथा टेका। बस उनके मन में हलचल होने लगी। उनको '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की हृदय में प्रेरणा हुई।

विमला बहन ने '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने का निर्णय किया। उन्होंने पूरी किताब पढ़ कर व्रत की विधि समझ ली। तभी गजेश आया। विमला बहन ने किताब बता कर उसे भी व्रत करने की सलाह दी । गजेश को मां पर बहुत स्नेह था। वह मां की बात कभी भी टालता न था। उसने मां का मन रखने को हा कर दी।

शुक्रवार आते ही मां–बेटे ने साथ ही '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' ग्यारह शुक्रवार करने की मन्नत मानी और उसी शुक्रवार से व्रत करना शुरू किया।

शनिवार गया.... रविवार आया ...... और सोमवार को गार्डन मिल से गजेश को इन्टरव्यू का लेटर आया। मंगलवार को वह इन्टरव्यू के लिये गया। शुक्रवार को एपाइन्टमेन्ट लेटर मिल गया। इस तरह गजेश को अच्छी नौकरी मिल गई।

घर में आनंद छा गया।

गजेश ने दुबारा इक्कीस शुक्रवार '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत मानी। '**धनलक्ष्मी मां**' की दशा से गजेश को प्रमोशन मिलता ही गया और तेजी से वह बड़े ओहदे पर आ गया।

इस तरह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' के प्रभाव से गजेश को अच्छी नौकरी मिल गई।

6. सुख–समृद्धि मिले

मालती स्वभाव की सरल, होशियार, मृदुभाषी और कार्यनिपुण थी। फिर भी उन पर दुःख के पहाड़ टूट पड़े। दो पुत्र हुए। फिर अचानक उनके पति का स्कूटर एक्सीडेन्ट हुआ और उनके दोनों पांव कट गये। दाहिना हाथ भी क्षतिग्रस्त हो गया। समझो जान ही बच गई। घर की जवाबदारी मालती पर आ पड़ी। शादी को चार–पांच साल ही हुए थे। इसलिये बचत भी न थी। सिर्फ

फ्लेट था... अपना।

वह बहुत व्याकुल हो गई। किन्तु बाहर से पति को जरा सा भी लगने न दिया कि वह घबरा गई है। उसने पति को बहुत हिम्मत दी। अचानक उसको याद आया कि उसकी सुशी भाभी कुछ तकलीफ आने पर '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करती है और उद्यापन में भाभी ने उसे भी बुलाया था और व्रत की पुस्तक दी थी।

वह तुरन्त उठी और वह पुस्तक खोज निकाली। खोल कर उसमें छपे हुए श्रीयंत्र, लक्ष्मीजी के विविध स्वरूप की छवियां देखी। व्रत की विधि पढ़ी। उसे हुआ, मैं भी यह व्रत करूं? लक्ष्मी मां अवश्य रास्ता दिखायेंगी।

और उसने वहीं बैठे–बैठे ही '**ग्यारह शुक्रवार** '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने की मन्नत मानी और वहीं बैठे–बैठे ही उसे मन ही मन जय मां लक्ष्मी का रटन शुरू कर दिया। शुक्रवार होते ही उसने पूरे भाव से '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' शुरू किया।

पांचवा शुक्रवार था। उस दिन मालती की सखी रीमा उसे मिलने आयी। दोनों अपनी–अपनी बातें कर रही थीं मालती की तकलीफें सुनकर रीमा ने कहा, मालती तेरी तकलीफें दूर करने का एक रास्ता है तू ब्यूटी–पार्लर शुरू कर। तूनें ब्यूटी–पार्लर का कोर्स भी किया है। और तू चित्रकारी भी अच्छी कर लेती है। तुझे तो यह सब कितना अच्छा आता है। तेरे फ्लेट में से एक रूम ब्यूटी–पार्लर के लिए खाली कर दे। हमारे पड़ोसी ब्यूटी–पार्लर का फर्नीचर साधन सब बेचने वाले हैं। क्योंकि वे फोरेन जा रहे हैं। उन्हें जल्दी है। हमारा संबध भी बहुत घरेलू है। मैं तुझे कम दाम में और सस्ते में सब दिलवादूंगी।

मालती को यह सब बात जंच गई। उसने तुरन्त पति की अनुमति मांगी। पति को भी पत्नी घर में रहकर कुछ करे, उसमें कोई ऐतराज न था। उन्होंने अनुमति दे दी। मालती ने रीना को कहा, तू जल्दी ही मुझे ब्यूटी–पार्लर का सामान दिलवा दे। मुझे तेरी बात बहुत जंच गई। काम भी होगा और पति–बच्चों

का ख्याल भी रहेगा। सात दिन में ही मालती ने घर में ब्यूटी–पार्लर खोल दिया।

'**धनलक्ष्मी मां**' की कृपा से एक ही माह में उसका पार्लर अच्छा जम गया। इस तरह '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' के प्रभाव से मालती को रास्ता मिल गया। एक ही साल में मालती ने बहुत से पैसे कमा लिए। उसमें से पड़ोस का फ्लेट खरीद कर उसमें एयरकन्डीशन ब्यूटी–पार्लर खोला। ऐसी है '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की महिमा।

7. खोया हुआ बच्चा वापस मिला

हेमा के दो लड़के थे। उसमें से दो साल का छोटा बच्चा कुंभ मेले में खो गया। गांव–गांव, शहर–शहर छान मारा। पर बच्चा नहीं मिला। रात–दिन हेमा रोया करती। उसके पति भी उदास से होकर हेमा को संभालने की कोशिश में लगे रहते।

एक दिन वे लोग बड़े लड़के की पाठ्य पुस्तक खरीदने बाजार में गये। वहां पुस्तक विक्रेता की दुकान पर '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की किताब देखी। देखते ही देखते चार–पांच बहनें पुस्तक की सात–सात प्रतियां ले गई। उन्होंने भी एक किताब खरीद ली हेमा पति को कहने लगी–'मैं भी यह व्रत करूंगी।

फिर हेमा ने हाथ–पांव धोकर मन्नत मानी : 'हे धनलक्ष्मी मां! मैं आपका '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' इक्कीस शुक्रवार करूंगी और 101 किताबें बाटूंगी। पर मां ! मुझे मेरे खोये हुए लाल से मिला दो। अत: हेमा निरंतर '**जय मां लक्ष्मी**' का रटन करने लगी।

शुक्रवार आते ही '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' शास्त्रीय विधि से करने की शुरूआत की। शुक्रवार को थोड़ा गुड़ का शीरा बनाकर माताजी को प्रसाद रखा। हेमा को सपने में रंग–बिरंगी फव्वारे वाला बाग दिखाई दिया। उस बाग में उसका खोया

हुआ बच्चा खेल रहा था। तुरन्त उसकी आंखें खुल गईं।

सवेरे उठते ही **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की छवि को, लक्ष्मी जी के विविध स्वरूपों को और श्रीयंत्र को वंदन करके माथा टेका। फिर पति को सपने की बात कही। उसके पति ने कहा, 'तू जो बाग का वर्णन करती है, वह मैसूर का वृंदावन गार्डन लगता है। मेरा मन कहता है माताजी ने ही सपने में हमें संकेत दिया है।

हेमा पति के साथ उसी दिन मैसूर जाने के लिए निकल पड़ी। मैसूर पहुंचते ही दोनों वृंदावन गार्डन में गये और व्याकुलता से अपने बच्चे को ढूंढ़ने लगे। सपने में हेमा ने जिस जगह बेटे को देखा था, वही जगह पर उसका बेटा एक बच्चे के साथ खेल रहा था। उन दोनों बच्चों के नजदीक एक दंपति बैठे थे। उन्होंने जाकर दंपति को बताया कि यह बच्चा उसका है, वह कहां खो गया था और पेपर के कटिंग भी दिखाये।

मद्रासी दंपति ने भी कहा कि यह बच्चा वे लोग कुंभ स्नान करने गये थे तब ट्रेन में से मिला था। अत: वे लोग उसे अपने साथ मैसूर ले आये। फिर जरूरी कार्यवाही करके, मद्रासी दंपति को बहुत–बहुत धन्यवाद देकर हेमा और उनका पति अपने बेटे को घर ले आये।

हेमा हर शुक्रवार को कुछ न कुछ मीठा बनाकर माताजी को प्रसाद रखती। इस तरह इक्कीस शुक्रवार पूर्ण होते ही उसने भक्ति भाव से उद्यापन किया और एक सौ एक **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** की किताब बांटी। ऐसा है **'वैभवलक्ष्मी व्रत'** का प्रभाव।

८. लड़की की शादी हुई

राधा बहन की सुनार जाति में ज्यादातर स्त्रियां गौरवर्ण की और रूपवान हैं। पर राधा बहन की बेटी सोनली थोड़ी श्याम थी। सोनाली ग्रेजुएट हो गई

थी। पर उसकी शादी नहीं हो रही थी। धीरे–धीरे आयु बढ़ने लगी।

एक दिन सोनाली अपने कॉलेज फ्रेन्ड हिना से मिलने गई तो हिना एक किताब पढ़ रही थी। सोनाली ने पूछा, 'हिना, क्या पढ़ रही है?' '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' की किताब है। हमारी पड़ोसन लीला बहन ने आज उद्यापन किया है तो सबको एक–एक किताब बांटी थी।

'मुझे दिखा?'

हिना ने सोनाली को किताब दी। किताब पढ़ते–पढ़ते सोनाली को हुआ, मैं भी यह व्रत करके देखूं। शायद मेरी शादी हो जाय।

सोनाली ने कहा, 'हिना, यह किताब मैं ले जाऊं?'

'क्यों ? व्रत करने का विचार है? हेमा ने हंसकर पूछा।

'हां ! उमर बढ़ती जाती है, और दिल बैठ–सा जाता है।

'तेरी बात सच्ची है। यह किताब तू ले जा।'

शुक्रवार को सवेरे 11 शुक्रवार की मन्नत मानकर सोनाली ने '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' करने का संकल्प किया और व्रत शुरू किया। उसी रात उसके फूफाजी एक लड़के की बात लेकर आये। वह लड़का शांत स्वभाव और होशियार लड़की के साथ शादी करने का इच्छुक था। जो उसके व्यापार में हाथ बंटा सके। सोनाली तो यह सुनकर खुश हो गई। अगले शुक्रवार को ही सादगी से सोनाली की शादी हो गई।

ऐसी है '**मां धनलक्ष्मी**' की कृपा '**वैभवलक्ष्मी व्रत**' का चमत्कार।

श्री महालक्ष्मी की स्तुति

महादेवी महालक्ष्मी नमस्ते त्वं विष्णु प्रिये ।
शक्तिदायी महालक्ष्मी नमस्ते दुःख भंजनि ॥१॥
श्रैया प्राप्ति निमित्ताय महालक्ष्मी नमाम्हयम् ।
पतितोद्धारिणी देवी नमाम्यहं पुनः पुनः ॥२॥
वेदांस्त्वां संस्तुवन्ति ही शास्त्राणि च मुर्हुमुः ।
देवांस्तवां प्रणमन्तिही लक्ष्मी देवी नमोऽस्तुते ॥३॥
नमस्ते महालक्ष्मी नमस्ते भवभंजनी ।
भुक्तिमुक्ति न लभ्यते महादेवी त्वयि कृपा बिना ॥४॥
सुख सौभाग्यं न प्राप्नोति यत्र लक्ष्मी न विधते ।
न तत्फलं समाप्नोति महालक्ष्मी नमाम्यहम् ॥५॥
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहिमे परमं सुखम् ।
नमस्ते आद्यशक्ति त्वं नमस्ते भीड़ भंजनी ॥६॥
विधेहि देवी कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् ।
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ॥७॥
अचिन्त्य रूप चरिते सर्वशत्रु विनाशिनी ।
नमस्तुते महामाया सर्व सुख प्रदायिनी ॥८॥
नमाम्यहं महालक्ष्मी नमाम्यहम सुरेश्वरी ।
नमाम्यहं जगद्धात्री नमाम्यहं परमेश्वरी ॥९॥

साहित्य संगम के लिये
मुद्रक-प्रकाशक-जनकभाई नानुभाई नायक
मुद्रण स्थान : कुमकुम ओफसेट केलापीठ सूरत
प्रका.स्थान: साहित्य संगम बाबा सीदी, गोपीपुरा सूरत (गुजरात)

श्री लक्ष्मी महिमा

माँ वैभव लक्ष्मी व्रत में आरती करने के बाद इस श्लोक का पठन करने से शीघ्र फल मिलता है -

यत्राभ्यागदानमान चरण प्रक्षालनं भोजनम् ।
सत्सेवा पितृदेवार्चन् विधिः सत्यगवां पालनम् ॥
धान्या नामपि संग्रहो न कलहश्चित्ता तृरुपा प्रिया।
दृष्टा प्रहा हरि वसामि कमला तस्मिन गृहे निष्फला॥

भावार्थ

जहाँ मेहमान की आवभगत करने में आती है। उनको भोजन कराया जाता है । जहाँ सज्जनों की सेवा की जाती है। जहाँ निरन्तर भाव से भगवान की पूजा और धर्मकार्य किये जाते हैं। जहाँ सत्य का पालन किया जाता है, जहाँ गलत कार्य नहीं होते, जहाँ गायों की रक्षा होती है, जहाँ दान के लिए धान्य का संग्रह किया जाता है, जहाँ क्लेश नहीं होता, जहाँ पत्नी संतोषी होती है। ऐसे स्थान पर मैं सदा निश्चल रहती हूँ । इनके सिवा किसी जगह पर कभी-कभी दृष्टि डालती हूँ ।

आरती भगवती महालक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु विधाता ॥ओऽम॥
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ओऽम॥
दुर्गा रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत रिद्धि-सिद्धि पाता ॥ओऽम॥
तू ही पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ओऽम॥
जिस घर में तुम रहती, ताहि में गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ओऽम॥
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता ।
खान-पान धन वैभव, सब तुमसे आता ॥ओऽम॥
शुभ गुण सुन्दर मन्दिर, क्षीरोदधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ओऽम॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पार उतर जाता ॥ओऽम॥

बोलो भगवती महालक्ष्मी की जय।

श्लोक

विष्णु प्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धते।
आर्त हंत्रि नमस्तुभ्यं कुरु मे सदा॥
नमोऽनमस्ते महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

हे धन (वैभव) लक्ष्मी माँ। आपने जैसे शीला की मनोकामना पूर्ण की वैसे सब की मनोकामना पूरी करना और सबका कल्याण करना।

श्री महालक्ष्मी यंत्र

पद्माय नमः ३१
ब्रह्मणे नमः २१

यह महालक्ष्मी यंत्र के नित्य दर्शन करने से
लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।